

उम्मीदें और चुनौतियां

जम्मू-कश्मीर को अनुच्छेद 370 से लगभग मुक्त कर दिए जाने के बाद गुरुवार को प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम संदेश में भविष्य का जो खाका पेश किया और विकास के लिए जिन कार्य योजनाओं का जिक्र किया, वे इस बात की ओर इशारा करती हैं कि जम्मू-कश्मीर का भविष्य अब उज्ज्वल है। प्रधानमंत्री के संबोधन में इस बात का भरोसा साफ झलकता है कि कश्मीरियों के साथ भेदभाव के दिन अब लद चुके हैं और उन्हें अब उन सारे कष्टों और पीड़ा से मुक्ति मिलेगी जो दशकों से अनुच्छेद 370 के कारण उन्हें झेलने पड़े हैं। जाहिर है, केंद्र सरकार का सारा जोर अब कश्मीर घाटी में हालात सामान्य बनाने और उसके विकास पर होगा। इसके लिए सबसे जरूरी है स्थानीय लोगों के दिल को जीतना। और कश्मीरियों का दिल तभी जीता जा सकेगा जब सरकार की नीतियों के प्रति उनमें भरोसा पैदा होगा, वे राज्य में विकास होता देखेंगे, नौजवानों को रोजगार और बच्चों को शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ मिलने लगेगा। अगर केंद्र सरकार कश्मीरियों के लिए इन कसौटियों पर खरी उतरती है तो निश्चित रूप से लोगों का दिल जीत पाना कोई मुश्किल काम नहीं है।

इसमें कोई शक नहीं कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म करना एक कठिन और जोखिमभरा फैसला था। आज कश्मीर जिस हालत में पहुंच चुका है, उसका सबसे बड़ा कारण ही अनुच्छेद 370 रही जिसकी आड़ में स्थानीय राजनीतिक दल भोली-भाली जनता को छलते रहे और अपने नीहित स्वार्थ पूरे करते रहे। अनुच्छेद 370 की वजह से घाटी में अलगाववादी नेताओं की बड़ी जमात पनपती चली गई और पिछले कुछ सालों में पत्थरबाजों की फौज खड़ी करने में अलगाववादी तत्त्वों का बड़ा हाथ रहा। सब जानते हैं कि अलगाववादी नेता पाकिस्तान के इशारे पर काम करते हैं और उससे उन्हें हर तरह की मदद मिलती है। इस समस्या से निपट पाने में जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा बड़ी बाधा बना हुआ था। ऐसे में केंद्र सरकार राज्य में विकास का कोई भी काम कैसे शुरू कर सकती थी? कैसे वहां उद्योग लगाए जाते? हेरानी यह भी है कि देशभर में बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार कानून लागू है, लेकिन जम्मू-कश्मीर के बच्चे इससे वंचित थे। केंद्र सरकार राज्य के लोगों के लिए जितना भी पैसा देती, उसका बड़ा हिस्सा भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाता और लोगों को उसका कोई फायदा नहीं मिला। अनुच्छेद 370 की वजह से ही राज्य कुछ दलों और लोगों की जागीर बन गया था।

जम्मू-कश्मीर अब पुराने दौर से निकल चुका है। जो नया दौर है वह उज्ज्वल भविष्य की उम्मीदों के साथ बड़ी चुनौतियां भी लिए हुए है। चुनौतियां केंद्र सरकार के लिए ज्यादा हैं। प्रधानमंत्री ने जो एलान किए हैं उनमें विकास और रोजगार पर जोर है, ताकि नौजवानों को भटकने से बचाया जा सके। इसके लिए राज्य में निवेश हो और उद्योग लगे, ताकि युवाओं को काम-धंधा मिले। उन्होंने जम्मू-कश्मीर को सबसे बड़े पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की बात कही है। साथ ही फिल्म उद्योग से भी उन्होंने कहा है कि वह कश्मीर को भी केंद्र बनाए जिससे वहां रोजगार के मौके बनें। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर के सरकारी कर्मचारियों को भी अब देश के अन्य राज्यों जैसी सुविधाएं मिलेंगी। जम्मू-कश्मीर को पेट्री पर लाने के लिए सरकार को हर मोर्चे पर जूझना होगा। आतंकवादियों और अलगाववादियों की कमर तोड़नी होगी, राज्य को तेजी से विकास के रास्ते पर ले जाना होगा और सबसे जरूरी यह कि बल प्रयोग की नीति को छोड़ कर आमजन के दिल को जीतना होगा। प्रधानमंत्री ने इसका विश्वास दिलाया है।

सड़क पर हिंसा

सड़क पर लापरवाही से वाहन चलाने से हुए हादसों से इतर मामूली बात पर हिंसा के रूप में एक समस्या दिनोंदिन गंभीर होती जा रही है, जिसमें आए दिन किसी के साथ मारपीट या फिर हत्या तक कर देने के मामले सामने आ रहे हैं। बुधवार रात देश की सबसे बड़ी स्टील कंपनी भारतीय इस्पात प्राधिकरण (सेल) के अध्यक्ष के साथ जिस तरह की घटना हुई, उससे साफ है कि सड़क पर वाहन चलाते हुए कोई व्यक्ति नाहक ही जानलेवा हिंसा का शिकार हो सकता है। दक्षिणी दिल्ली के हैज खास इलाके से जब वे गुजर रहे थे, तब अचानक ही एक कार उनकी कार के आगे खड़ी हो गई, उसमें से चार लोग निकले और बिना किसी बात के उन्हें डंडों और लोहे की छड़ से पीटने लगे। गनीमत बस यही रही कि इलाके में गश्त कर रहे दो पुलिसकर्मियों की नजर उन पर पड़ गई और उन्होंने उन्हें बचाया। लेकिन कल्पना की जा सकती है कि अगर किन्हीं वजहों से गश्त कर रहे पुलिसकर्मी वहां नहीं पहुंचते तो सेल अध्यक्ष के साथ क्या हो सकता था।

हालांकि यह कोई पहली घटना नहीं थी जिसमें बिना किसी बात के सड़क पर मारपीट की गई हो। हो सकता है कि यह कोई सुनियोजित आपराधिक घटना भी हो। यह जांच के बाद ही साफ होगा। लेकिन ऐसी खबरें अक्सर आती रहती हैं जिनमें बहुत छोटी चूक से वाहन अगर किसी अन्य गाड़ी में धूँ जाए या वाजिब कारणों से भी रास्ता बाधित हो जाए तो लोग थोड़ा खूब नज़र नहीं रखते और एक दूसरे के साथ बेहद तल्ख भाषा में बहस करने लगते हैं। इसी दौरान कई बार दोनों या फिर एक पक्ष हिंसक हो जाता है और किसी की जान भी चली जाती है। सवाल है कि सड़क पर जिस तरह की गलतियां अनेदखी करने लायक होती हैं या फिर थोड़ी बातचीत से उससे उपजी समस्या को दूर किया जा सकता है, उस पर आपसी बहस का स्तर इस हद तक कैसे चला जाता है जिसमें किसी की जान भी चली जाती है। ऐसा लगता है कि लोगों के भीतर धीरज और सहिष्णुता का पैमाना इतना कम हो गया है कि वे मामूली बात पर भी गाली-गलौज या हिंसा पर उतर जाते हैं। बिना बात के गुस्सा होने के बाद उन्हें इसका भी होश नहीं रहता कि इसकी जद में आकर हिंसा करने पर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई भी हो सकती है।

हालांकि फिलहाल सड़क पर हिंसा के मामलों में जितनी और जिस प्रकृति की सजा है, उसकी वजह से खुद पर लगाम खोने वाले लोग शायद निश्चित रहते हैं। इसके अलावा, शहरी जीवन को रफ्तार के साथ जीने वाले लोग इसमें किसी तरह का खलल नहीं चाहते और सड़क पर मामूली बाधा से उनका धीरज छूट जाता है। यह एक तरह से खुद को श्रेष्ठ मानने की कुंठा से भी जुड़ा होता है जो थोड़ा-सा मौका पाते ही बेलगाम होकर फूट जाता है। नतीजतन, कई बार किसी को बुरी तरह हिंसा का शिकार होना पड़ता है तो किसी की जान भी चली जाती है। इसी के मद्देनजर हाल के दिनों में यह मांग तेजी से उठी है कि वाहन चलाते हुए अपने बर्ताव पर लगाम खोने वालों के खिलाफ सख्त कानून बनाए जाएं, ताकि सड़क पर हिंसा की मानसिकता वाले लोगों को ठोस सबक मिल सके। सड़क पर सुविधाजनक और सहज तरीके से वाहन चलाना किसी का अधिकार हो सकता है, लेकिन अगर इसमें यातायात नियमों के साथ-साथ जरूरी सलीका नहीं है तो इससे हिंसा करने वाले के सभ्य होने पर भी सवालिया निशान लग सकते हैं।

कल्पमेधा

अगर तुम्हारा स्वभाव ही है तो चिंता करके कष्टों का आह्वान करो, लेकिन उसे पढ़ीसियों को उधार मत दो।

- रुडयार्ड किपलिंग

जनसत्ता

www.jansatta.com

प्रभात झा

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

अब हर पार्टी के सांसदों-नेताओं को दोनों सदनों में सावधान रहना पड़ेगा। सत्तर साल देश की जनतांत्रिक राजनीति में युगांतकारी परिवर्तन हुए हैं। उसका ताजा उदाहरण 2019 का आम चुनाव रहा है। इस लोकसभा चुनाव में जनता स्वयं आगे आकर चुनाव लड़ी। जनता समझती है कि देश कहां सुरक्षित है, किसके हाथ में सुरक्षित है, किसे चुनना चाहिए।

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

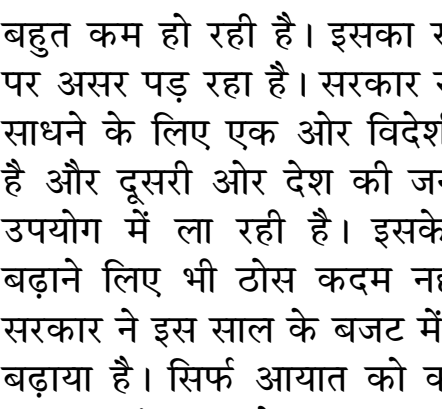
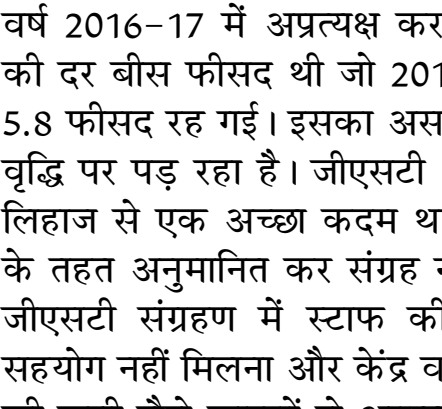
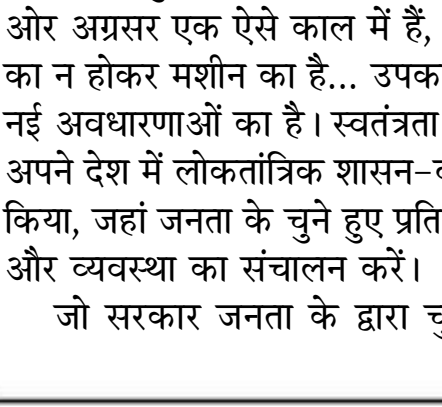
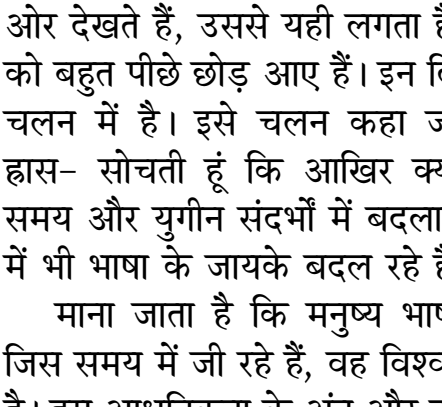
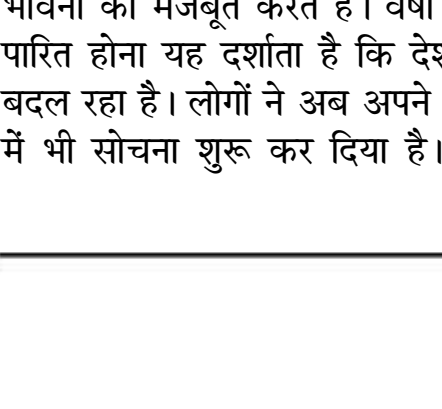
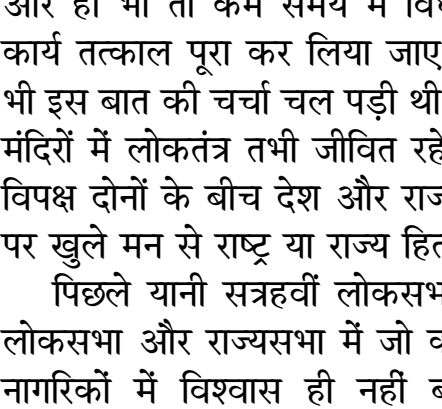
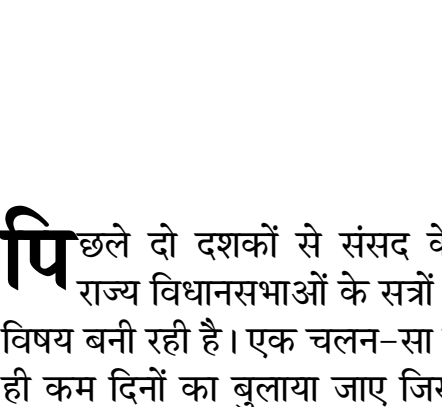
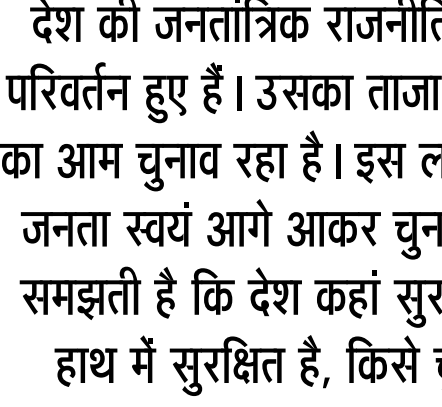
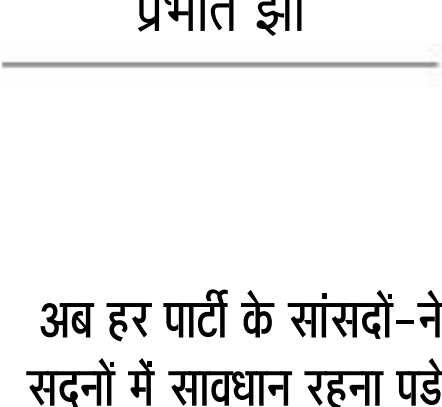
Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha



गरिमा बढ़ी और विश्वास भी

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha

Prabhat Jha